जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड,
सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
ऑफिस मो. : ८२६२०५६४८०
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५७ वे ❖ अंक १० वा ❖ जून २०२६ ❖ वीर संवत २५५२ ❖ विक्रम संवत २०८२

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● सम्राट संप्रति म्युजियम कोबा	१५	● भारत सरकार जनगणना २०२७	३७
● ।। जिनेश्वरी ।।		● वन मिनिट प्लीज	३८
अध्याय ७ – उरभ्रीय	१७	● ज्ञानाचे पाच प्रकार	४१
● कव्हर तपशील	२१	● सखे कविते	४८
● आचार्य चंदनाजी – वैचारिक सुगंधाचा		● बिने जाने कित जाऊँ – प्रश्नोत्तरी प्रवचन	५७
वटवृक्ष कोसळला	२२	● जैन जागृती सेंटर, पुणे	५८
● जीवन की पावरफुल बातें	२३	● आओ, दुर्ध्यान छोडें – २५ : कामध्यान	५९
● वाणीभूषण श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. –		● नफरत V/s प्यार	६३
अभिनंदन ! अभिनंदन !!	२४	● आचार्य चंदनाजी – शुभांजली	६४
● छोटी सी बातें	२६	● आत्मा का अवरोध अहंकार	६७
● अरिहंत जागृती मंच, पुणे – निबंध स्पर्धा	३१	● डर के आगे जीत है	६८
● तमिळ साहित्य संवर्धन में		● छिद्रान्वेषी ना बण	७१
जैनों का योगदान	३२	● बिखरे मोती	७२
● जैन धर्माच्या स्वतंत्र अस्तित्वाला धोका –		● Password – पासवर्ड	७४
कारण व समाधान	३३	● आचार्य चंदनाजी व श्री प्रीतीसुधाजी म.सा.	
● जितो पुणे – स्किलॅथॉन २०२६	३५	– श्रद्धांजली सभा, पुणे	७९

- सूर्यदत्त इन्स्टिट्यूट – पुरस्कार ८०
- श्री. धीरज जैन – मानव सेवा पुरस्कार ८१
- अध्यात्म यानी क्या ? ८२
- प्रेम जीवन का कर्तव्य है ८३
- जैन चेअर, पुणे विद्यापीठ ८४
- सिद्धी फाऊंडेशन, पुणे – रक्तदान शिबीर ८७
- गाथार्थ ८८
- महावीर की रोटी, पिंपळे सौदागर ९०
- जैन श्रावक संघ, लोणावळा ९०
- स्वानंद महिला संस्था, पुणे ९१
- सौ. कल्पना बंब, पुस्तक प्रकाशन ९१
- सोमैया विद्याविहार, मुंबई ९३
- हास्य जागृती ९४
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति – ''मॅगझिन पोस्ट'' सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र साठी)

*** वार्षिक वर्गणी – रु. ८०० * त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २३००**

जैन जागृति – ''मॅगझिन पोस्ट'' सुविधेसह वर्गणीचे दर (महाराष्ट्र बाहेर)

*** वार्षिक वर्गणी – रु. ९०० * त्रिवार्षिक वर्गणी – रु. २६००**

''मॅगझिन पोस्ट'' द्वारा बंद पाकिटातून मासिक घरपोच पोहचण्याची १००% हमी.

या अंकाची किंमत ५० रु. • **Google Pay - M. 9822086997**

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा.
- 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/ AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

''सम्राट संप्रति म्यूजियम'' श्री महावीर जैन आराधना केंद्र, कोबा प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्रभाई मोदीजी के कर कमलों से उद्घाटन

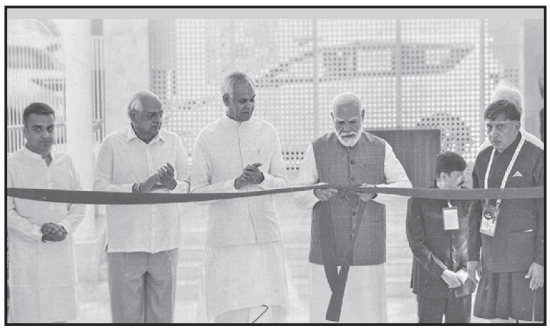

भगवान महावीर के २६२५ वें जन्मकल्याण के दिन दि. ३१ मार्च २०२६ को राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्य श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी महाराजा की पावन निश्रा में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्रभाई मोदीजी के करकमलों से श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा द्वारा आयोजित भारत का एक अनूठा एवं अनमोल संग्रहालय ''सम्राट संप्रति म्यूज़ियम'' का भव्यातिभव्य उद्घाटन हुआ। इस महा अवसर पर गुजरात के राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत, माननीय मुख्यमंत्री श्री. भूपेन्द्रभाई पटेल, उपमुख्यमंत्री श्री. हर्षभाई संघवी, श्री. महावीरजी जैन आराधना केन्द्र, कोबा के प्रमुख एवं म्यूज़ियम के प्रमुख दाता श्री. सुधीरभाई महेता, सर्व ट्रस्टीवर्य श्री. प्रेमलभाई कापडिया, श्री. श्रीपालभाई, श्री. हसमुखभाई गडेचा, श्री. दर्शितभाई, श्री. डिम्पलभाई इत्यादि समस्त ट्रस्टी गण तथा आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा की समग्र टीम उपस्थित रही।

माननीय प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्रभाई मोदीजी ने सर्वप्रथम फीता खोलकर म्यूज़ियम का लोकार्पण किया, उसके बाद नामोल्लेखित तख़्ती का अनावरण किया, तत्पश्चात आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर द्वारा प्रदर्शित की गई श्रुतप्रदर्शनी का अवलोकन किया।

इस प्रदर्शनी में सब से पहले किस प्रकार यहाँ किस दुर्दशाभरी परिस्थिति में ज्ञान विरासत का कन्जर्वेशन लैब के द्वारा संरक्षण किया जाता है, उसे दर्शाया गया, उसके बाद विविध सदियों, आकारों, लिपिओं एवं विविध विषयों की लेखन-वैविध्यपूर्ण सचित्नादि पांडुलिपियों को क्रमबद्ध प्रदर्शित किया गया था। साथ ही विविध विषयों के विविध समय व छपाई के मुद्रित पुस्तकों को भी प्रदर्शित किया गया था। इन सबकी श्रुतसेवी पूज्य आचार्य श्री अजयसागरसूरिजी म.सा. ने योग्य महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। प्रधानमंत्रीश्री ने भी अलग अलग जगहों पर रुक कर उन विषयों की रसपूर्वक जानकारी ली एवं सुक्ष्मता से निरीक्षण किया। प्रदर्शनी को देखकर वे अति हर्षान्वित हुए।

श्रुतप्रदर्शनी के बाद माननीय प्रधानमंत्री ने राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्य श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी से आशीर्वाद ग्रहण किया। मोदीजी ने राष्ट्रसंतश्री की व्हिलचेर स्वयं अपने हाथों से चलाकर दर्शकों को विस्मित कर दिया था। तत्पश्चात् नूतन म्यूज़ियम का अवलोकन किया। यहाँ पर भी प.पू. आ. श्री

अजयसागरसूरिजी ने विविध कलाकृतियों का श्रीमान मोदीजी को परिचय कराया। साथ में पू. आचार्य श्री प्रशांतसागरसूरि म.सा., संस्था के प्रमुख श्री. सुधीरभाई, समग्र म्यूज़ियम के निर्माण के सूत्रधार ट्रस्टीवर्य श्री. प्रेमलभाई कापडीया साथ रहे थे।

म्यूज़ियम की मुलाकात के बाद श्रीमान मोदीजी सभा मंडप में पधारे थे। जहाँ विविध जैन संघों एवं संस्थानों के पदाधिकारी गण, जैन-जैनेतर विद्वज्जन आदि लगभग १०,००० से भी अधिक श्रद्धालुओं की उपस्थिति थी। राष्ट्रसंतश्री के मंगलाचरण के साथ सभा का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ ।

संस्था के चेअरमेन श्री सुधीर भाई का उद्‌बोधन, उपमुख्यमंत्री श्री. हर्षभाई संघवी एव मुख्यमंत्री श्री. भूपेन्द्रभाई पटेल का उद्‌बोधन हुआ। तत्पश्चात माननीय प्रधानमंत्री श्री. नरेन्द्रभाई मोदी ने भगवान महावीर की प्रतिमा को नमन व पुष्पार्पण करके राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्य श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी महाराजा आदि सभी साधु-साध्वियों को वंदना करते हुए अपने वक्तव्य का प्रारंभ किया।

प्रारंभ में ही उन्होंने तीन बार जय जिनेंद्र के नाद से समग्र सभा को आंदोलित कर दिया। उन्होंने कहा कि मैं बरसों से आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञान मंदिर से परिचित हूँ। महाराज साहब ने किस तरह अपनी तपस्या और साधना से इस संग्रहालय को खड़ा किया है, वह सच में काबिलेदाद है। सरकार तो प्राचीन ज्ञान विरासत हेतु आज़ादी के बाद इतने वर्ष बीतने पर आज जागृत हुई है, लेकिन आचार्य श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी आज से ६० वर्ष पूर्व से ही इस कार्य में लग गए थे, उसी परिश्रम का परिणाम है कि आज कोबा में तीन लाख से भी अधिक पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं। यहाँ मात्र जैनों के ही ग्रंथ एवं साहित्य हो ऐसा नहीं है, समग्र विश्व का साहित्य यहाँ उपलब्ध है। यहाँ की पवित्र भूमि अनेक साधु-साध्वियों के तप से पावन हुई है, उसी का फल यह सम्राट संप्रति म्यूज़ियम है। तत्पश्चात अपने वक्तव्य में जैन धर्म के नव पद की भी चर्चा की थी और अन्त में गुजराती में सभी को अनुरोध किया कि महाराज साहब ने तो यह सब परिश्रम करके किया लेकिन हमें यहाँ आकर सिर्फ देखकर चले नहीं जाना है, बल्कि यहाँ की अमूल्य धरोहर को समझना भी है विश्व में इसका प्रचार भी करना है। समग्र भारत में एक अनूठा और दिव्य अनुभूति कराने वाला यह संग्रहालय अपने आप में बहुत ही समृद्ध एवं अनूठा है। अन्त में माननीय प्रधानमंत्री श्री ने सभी साधुभगवंतों को नमन करके अपना वक्तव्य पूर्ण किया।

राष्ट्रसंतश्री ने भी अपने वक्तव्य में कहा था कि आज तक भारत की जनता पर राज करने वाले कई नेता हुए लेकिन जनता के दिल में राज करने वाले यह पहले प्रधानमंत्री हैं। इनका मार्गदर्शन कोरोना काल में देश के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा था, वैसे ही आज भयंकर युद्ध की आग में जल रहे विश्व के बीच भी भारत को किसी बात की कमी न रहे उसकी संपूर्ण व्यवस्था इन्होंने कर रखी है। विश्व के देशों के साथ ऐसी स्थिति में तालमेल बनाकर रखना आसान काम नहीं होता है, जो मोदीजी ने किया है। ये आधे साधु हैं।

इस कार्यक्रम में प.पू. आ.श्री वर्धमान सागरसूरिजी, प.पू. आ. श्री अरुणोदय सागरसूरिजी, प.पू. आ. श्री विनय सागरसूरिजी, प.पू. आ. श्री हेमचंद्र सागरसूरिजी, प.पू. आ. श्रीविवेक सागरसूरिजी, प.पू. आ. श्री अजय सागरसूरिजी, प.पू. आ. श्री अरविंद सागरसूरिजी, प.पू. आ. श्री प्रशांत सागरसूरिजी आदि अपने शिष्यपरिवारों के साथ उपस्थित रहे थे। साथ ही कई साध्वीजी भगवंत श्री उपस्थित रहे थे। हज़ारों की संख्या में अन्य भी भाविक दूर-दूर से इस भव्य म्यूज़ियम लोकार्पण में उपस्थित रहे और अपने आप को गौरवान्वित किया। ●

आचार्य चंदनाजी... वैचारिक सुगंधाचा महावृक्ष कोसळला !

लेखक : युवराज शहा, पुणे. मो. : ९८२३०५५६०६

जैन साध्वी आचार्य चंदनाजी यांचे २२ एपिल २०२६ रोजी लौकिक अर्थाने महानिर्वाण झाले. त्यांची एकंदरीत प्रतीमा, कार्य आणि वावर मदर टेरेसा यांची आठवण करून देणारीच होती. अलीकडे स. प. महाविद्यालयाच्या मैदानावर झालेल्या महावीर जन्मकल्याणक दिनानिमित्त नुकत्याच आयोजित नवकार मंत्र पठण कार्यक्रमात त्यांचे जनतेला जे जाहीर दर्शन झाले ते बहुधा अखेरचेच ठरले असावे.

चंदनाजी या मूळच्या राजगुरूनगर तालुक्यातील चासकमान या छोट्याशा गावातील कटारीया कुटुंबातील. शकुंतला कटारिया हे त्यांचे जन्म नाव. तर चंदनाजी हे त्यांचे मुमुक्षु नाव. वयाच्या १४ व्या वर्षी त्यांनी साध्वी म्हणून दीक्षा घेतली आणि आपला जीवनमार्ग बदलला, १२ वर्षे कडक मौन व्रत घेऊन जैन आगम, विविध धर्माचा तौलनिक अभ्यास केला. शास्त्री, दर्शनाचार्य, साहित्यरत्न अशा अनेक पदव्या त्यांनी मिळवल्या. बनारस हिंदू विश्वविद्यालया मधून नव्य-न्याय व व्याकरण विषयात त्यांनी शास्त्रीपद प्राप्त केले, भारत सरकारने त्यांच्या आजपर्यंतच्या विश्वव्यापी कर्तृत्वाची दखल घेऊन देशातील उच्च मानांकित पद्मश्री पुरस्काराने त्यांचा बहुमान केला.

आचार्य चंदनाजी या भगवान महावीर यांच्या जैन धर्माच्या उच्चतम वैचारिक परंपरेतील होत्या. जैन समाजात महिला श्राविकेला पुरुषश्रावका इतकाच समान सन्मान बहाल केला असला, तरी सुद्धा प्रत्यक्ष व्यवहारात मात्र साधूंना साध्वीं पेक्षा पुरुषप्रधान ज्येष्ठत्व बहाल केले जात असे, या सर्वांना छेद देऊन जैन समाजाच्या २६०० वर्षाच्या इतिहासात चंदनाजी पहिल्या महिला आचार्य ठरल्या आहेत. सन्यस्त धर्माच्या त्याच त्याच जुनाट मळलेल्या प्रतिगामी वाटेने न जाता, त्यांनी साधू धर्माच्या परिसीमा बदलून भगवान महावीरांना अभिप्रेत असलेल्या प्रगतिशील पुरोगामी विचारांचा मार्ग पत्करला आणि प्रस्थापित साधूंचा आत्मक्लेशकारी मार्ग सोडून त्यांनी आपला स्वतःचा व्यवहार्य नवमार्ग अधोरेखित केला. १९८७ मध्ये राष्ट्रसंत अमरमुनी यांनी त्यांना आचार्यपदाची दीक्षा दिली आणि जैन समाजात कोणताही सक्षम साधूच काय पण साध्वीसुद्धा सर्वोच्च स्थान ग्रहण करू शकते हा क्रांतीकारी संदेश जगाला दिला.

आचार्य चंदनाजींचे कार्य सेवा, शिक्षण आणि साधना या तीन स्तंभांवर आधारित आहे. चंदनाजी आणि त्यांच्या अनुयायी साध्वींनी महावीरांचा निसर्गाचा सर्वोच्य आदर करणारा ''जगा आणि जगू द्या'' हा पर्यावरणी मंत्र जगभर पसरवला, आजच्या वेगवान रॉकेट युगात पायपीट करून आपण इतक्या मोठ्या जगात लोकांसमोर पोहोचू शकत नाही म्हणून त्यांनी आपल्या संपर्क पद्धतीत आधुनिक कालसुसंगत बदल केले. १९७३ साली त्यांनी वीरायतन या सेवाभावी संस्थेची ना नफा ना तोटा या तत्त्वावर स्थापना केली आणि देशात विविध ठिकाणी त्यांची केंद्रे उभारली, देशभरात वेगवेगळ्या दहापेक्षा अधिक अशी केंद्रे कार्यरत आहेत. आपल्या सेवा देण्याच्या जीवन कर्माचा भाग म्हणून त्यांनी कुठलाही गाजावाजा न करता बिहार, कच्छ, राजस्थान सारख्या गरीब,

गरजू दुर्गम आदिवासी भागात शाळा, कॉलेजेस आणि अनेक अध्यापन महाविद्यालये, ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट, फार्मसी इन्स्टिट्यूट सुरू केल्या. पावापुरी येथे B.Ed कॉलेज, लचुआड येथे धर्मार्थ शाळा, कच्छ जिल्ह्यात दोन प्राथमिक व एक माध्यमिक शाळा सुरू केली. हजारो गरीब, आदिवासी मुला-मुलींना मोफत अल्पदरात शिक्षण देऊन त्यांना जगण्याचे मार्ग सुलभ करून दिले, अनेक गुन्हेगारीकडे वळलेल्या लोकांना त्यांनी शाकाहारी, निर्व्यसनी मार्गावर परत आणले, त्यांचे जीवनमान सुधारण्यासाठी त्यांना आर्थिक स्थिरस्थावर केले आणि रोजगार उपलब्ध करून दिला.

त्यांच्या आरोग्यासाठी बिहारमधील राजगीर येथे डोळ्यांचे रुग्णालय उभारून हजारो गरजू गरीब आदिवासींच्या मोफत शस्त्रक्रिया केल्या, भारतातील विविध प्रांतात अचानक आलेल्या विविध नैसर्गिक आपत्तीत चंदनाजी सर्वप्रथम २००१ च्या कच्छ भूज भूकंपात स्वतः तेथे फिरून शेकडो अनाथ मुलांना त्यांनी आधार दिला, कोशी पूरग्रस्त भागात त्यांनी पूरग्रस्तांसाठी निवारे आणि. भोजनशाळा सुरू केल्या, लोकांचे अश्रू पुसणे हेच त्यांचे एकमेव जीवीत कार्य होते, त्यासाठी नेपाळ मधील विनाशकारी भूकंपात त्या तिथे पोहचल्या. कुठेही वेदनेचा हुंकार ऐकला की तिथे चंदनाजी जाणारच हे ठरलेलेच असायचे, बिहारच्या दुष्काळी व दुर्लक्षित दुर्गम भागात चंदनाजी नियमितपणे अनेक आरोग्य शिबिरे, व्यसनमुक्ती अभियान आणि जलसंवर्धनाची कामे त्या करवून घेत असत.

आचार्य चंदनाजींनी जैन साध्वी परंपरेला समाजाभिमुख बनवले. 'मंदिरात पूजा करून आपले धार्मिक कर्तव्य संपले' असे न मानता, रुग्णालय, शाळा, आपत्तीसेवा यातूनच महावीरांचा कर्मसिद्धांत सुरू होतो हे लोकांवर बिंबवले, आणि स्वतः आपल्या कामातून महावीरांची करुणेची शिकवण प्रत्यक्षात आणली. 'आज त्यांनी या जगाचा अखेरचा निरोप घेतला, तरी त्यांचे काम हे प्रवाहपतीत समाजाच्या डोळ्यात अंजन घालणारे होते आणि मृत्यू पश्चात सेवा हीच खरी साधना' हा त्यांचा संदेशच जैन समाजासाठी दिशादर्शक ठरणार आहे. ●

जीवन की पावरफुल बातें

लेखक : श्री चन्द्रप्रभाजी म.सा.

आप उनकी राहें पर फूल नहीं बिछा सकते
तो क्या हुआ, कम-से-कम काँटे तो
बीन ही लीजिए ।

खुद को स्थापित करने के लिए आपको
अपने पिताजी से दुगुनी उपलब्धियाँ हासिल करनी
होगी । नई राहें कठिन तो होती हैं, पर नई
ऊँचाइयाँ छूने का यही शॉर्टकट है ।

करियर से पहले कॅरेक्टर पर ध्यान दीजिए ।
करेक्टर बेचकर अगर करियर बना रहे हैं तो इसका
मतलब है पहला कदम ही गलत दिशा
में उठा रहे हैं ।

कंजूसी लोगों से हमें तोड़ती है, जबकि उदारता
लोगों से जोड़ती है । कंजूस का न कोई मित्र होता
है और न कोई समर्थक, जबकि उदारता दूसरों को
चुंबक की तरह आकर्षित करती है ।

रिश्तों को बनाने में नहीं, निभाने में विश्वास रखिए ।
रिश्तों को बनाना उतना ही आसान है जितना
मिट्टी पर मिट्टी से मिट्टी लिखना, पर
उन्हें निभाना उतना ही तपस्यापूर्ण है जितना
पानी पर पानी से पानी लिखना । ●

वाणीभूषण, संस्कार भारती, परमपूज्य श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. अभिनंदन ! अभिनंदन !!

लेखिका : साध्वी संयमप्रीतिजी म.सा.

अभिनंदन – सर्वजनहिताय – सर्वजन प्रबोधनाय के संयमी यात्री का अभिनंदन – वंदन सुशीलनंदन का!

जिन्दगी केवल न जीने का बहाना,
जिन्दगी केवल न साँसो का खजाना।
जिन्दगी सीन्दूर है पूरब दिशा का,
जिन्दगी का काम है सूरज उगाना ।।

इस उक्ति को सार्थक करनेवाले, जैन जगत के गगन में उज्ज्वल आभा फैलानेवाले, मातृभक्ति, सद्गुरुप्राप्ती एवं आत्मशक्ति की त्रिवेणी धारा से रवितेज सम ओजस्वीता से जिन्दगी को प्रकाशित करनेवाली शक्ति का नाम है – वाणीभूषण, संस्कारभारती, परमपूज्य श्री प्रीतिसुधाजी म.सा. !

व्यक्ति अपने जीवनकाल में अपने व्यक्तित्व को जिसप्रकार से निखारता है समाज को, देश को जो जितना योगदान देता है उसीका मुल्यांकन सामान्यतया अभिनंदन की पृष्ठभूमि बनती है। न प्रीति की जातपात होती है – न सुधा का संप्रदाय होता है। भेद में नहीं अभेद में ही प्रीति एवं सुधा है। इसी शाश्वत सत्य का वर्तमान जागृत जनसुलभ व्यक्तिमत्त्व है – प्रीतिसुधाजी! जिनकी स्नेहदृष्टि एवं वाक्सुधा का अनुभव गत ६१ साल से सर्व जन को प्राप्त है। ऐसे संयम-श्रद्धा-मानवसेवा-गौरक्षण-संस्कृति पूजन में समर्पित यात्री का ८१ वाँ –

प्लॅटिनम महोत्सवीय अभिनंदन !

सांप्रदायिक संकीर्णता की मानसिक जकडन के अंधियारे के धर्म के उदार-विशाल आकाश के प्रकाश में जनमानस को आलोकमय बनाने का भगीरथ कार्य प्रीतिमय सुधा सरस्वती से छः दशक से हो रहा है। क्या हिन्दू, क्या मुस्लिम, क्या सिक्ख, क्या ईसाई, क्या श्वेताम्बर, क्या दिगम्बर, क्या स्थानकवासी, क्या तेरांपंथी ? सभी को धर्म के मानवीय सार्वभौम मूल्यों से संस्कारित कर – मानवधर्म समझाकर सन्मार्ग दर्शानेवाले सांप्रदायिक विचारों से पर धर्म संवाद करनेवाली –

सरस्वती माँ प्रीतिसुधाजी का अभिनंदन !

सार्वजनिक लोकप्रियता के शिखरपर आसीन होनेपर भी जिन्हें शुद्ध आध्यात्म साधना की गहन अभीप्सा है – ऐसे अध्यात्मपथ के सहज-सरल स्नेहमयी

अमृतमय यात्री का अभिनंदन !

भारतभूमी की श्रेष्ठ – विशिष्ट संत परंपरा का अनोखा गहना, ज्ञानयोग – कर्मयोग – भक्तियोग के सहज सुंदर समन्वय का श्रेष्ठ उदाहरण, सत्यं-शिवं-सुन्दरम् की साधिका, धर्म प्रभावक, जीवदया एवं आध्यात्म के असाधारण ..... ऐसी

आध्यात्म योगिनी का अभिनंदन!

आपका सुधामय व्यक्तित्त्व, वक्तृत्त्व, कवित्त्व, असाधारण कर्तत्त्व जनसमाज के लिए गौरव – आनंद एवं आश्चर्य का विषय बना बुद्धिप्रधान मस्तिष्क एवं भावना प्रधान हृदय दोनों समान रुपसे कार्यरत होते हैं।

प्रखर वक्ता के साथ सुमधुर गायन की देन आपको विरासत में मिली है । जो प्रतिभाशाली – प्रभाव को दर्शाती है – ऐसे लाजवाब वक्तृत्त्व के धनी एवं सुश्राव्य कंठ के स्वामी –

अपराजित व्यक्तित्त्व का अभिनंदन!

आपने वाणीवैभव से अनेक समाजहित के कार्य संपन्न किए जो आज भी स्थान-स्थानपर सुचारु रुप से चल रहे है । भारतीय संस्कृति युक्त इंग्लिश मिडियम स्कूल की निर्मिती, समाज में पनपनेवाली आसूरी शक्ति पर पाबंद लगाने के लिए शाकाहार, व्यसनमुक्ति, आवश्यक स्थानों पर धर्मस्थानकों की निर्मिती – श्री संघों की संगठीत शक्ति का एकत्रीकरण, सुशील बहु मंडलों के माध्यम से नारी शक्ति का जागरण, भावी पीढ़ी सुसंस्कारित हो इस दूरदर्शिता से बच्चों के संस्कार शिबिर – पाठशालाओं की प्रेरणा – इस प्रकार मानव उत्थान के सफल कार्य करनेवाले –

स्फूर्तिमय मातृशक्ति का अभिनंदन !

भारतीय संस्कृति का मानदंड स्वरुप गौमाता की चित्कारें भी आपसे उपेक्षित नहीं रही । गौहत्या बंदी के लिए विविध स्थानों में बड़े बड़े आंदोलन किए । कत्तलखानों की ओर ले जानेवाले जानवरों को पुलिस-वकील-गौरक्षक एवं जिगरबाज युवाशक्ति को प्रेरित करके बचाना तथा समाज को जीवदाया का महत्त्व समझाकर गौरक्षण संस्थाएँ खोलकर गौवंश पालन करने हेतु गौशालाओं का निर्माण करनेवाली –

साहसमूर्ति गौरक्षा प्रेमी का अभिनंदन !

सन १९८२ में बम्बई चातुर्मास के समय देवनार पशुवध शाला में तीन बार हजारों लोगों के साथ स्वयं जाकर आंदोलन किया । आचार्य सम्राट पू. आनंदऋषिजी म.सा. की आशा से पू. माताजी म.सा. की आशिषों से एवं श्री. विनोबाजी भावे तथा उनके सहकारियों के सहयोग से यह ऐतिहासिक कदम उठाकर गौरक्षा का कार्य प्रारंभ किया – जो आजतक १६ गौशालाओं के माध्यम से अनवरत चल रहा है । यह साहसी कदम उठानेवाली

देवनारी का अभिनंदन !

पुणे में यांत्रिकी कत्तलखाना खुलनेवाला था तब आमदार श्री. चंद्रकांतजी छाजेड की अध्यक्षता में हजारों लागों गे साथ स्वयं साध्वीमंडल को साथ लेकर पुणे महानगरपालिका (कार्पोरेशन) में जाकर वह प्रस्ताव रद्द करवाया । इस प्रकार सामाजिक, धार्मिक या आध्यात्मिक क्षेत्र में साहसपूर्ण – विवेकयुक्त ऐतिहासिक कार्य करने का अदम्य साहस केवल आपमें ही हो सकता है ।

ऐसे क्रांतिकारी स्त्री शक्ति का अभिनंदन !

देश सुरक्षित तो धर्म सुरक्षित – इस बात को ध्यान में रखते हुए अनेक देशहित कार्यों में राजपुरुषों को भी समय-समय पर प्रेरित करके उद्‌बोधन दिये हैं । जैसे नागपूर में १९९४ के चातुर्मास में तत्कालीन पंतप्रधान श्री. पी. व्ही. नरसिंहराव आपके दर्शनार्थ आये थे । उन्हें ४० से ५० हजार जनमेदिनी के सामने प्रबोधन देकर धर्मध्यान के उपकरण-माला आदि देकर राजतंत्र का मंत्र दिया था । स्वतंत्रता दिन का योग साधकर श्री. शरदचंद्रजी पवार, श्री. जवाहरलालजी दर्डा आदि १४ मंत्रियों के सामने देशभक्ति की वंदे मातरम् इस बीज मंत्र की महिमा बताकर सभी में वरीरस का संचार करने की अद्‌भूत कला की उपासिका –

साध्वीरत्ना का अभिनंदन!

श्री. फकरुद्दीन अलि अहमद, श्रीमती इंदिरा गांधी, मेनका गांधी, लालाकृष्ण अडवाणी आदि अनेक राजपुरुषों का आवागमन आपकी धर्मसभा में होता रहा और आप अपनी वाणी-विचार एवं विवेकशीलता से सभी को प्रबोधित कर देशभक्ति का अनोखा परिचय देती रही ।

ऐसी राजगुरु स्थान पर विराजित महासाध्वीजी का अभिनंदन !

पुणे जैसे विद्यानगरी में – शिवाजीनगर जैसे सुशिक्षित स्थान में श्रीसंघ का निर्माण एवं भव्य धर्मस्थानक की वास्तु की निर्मिती के नींवरुप (पायोनियर) आप ही है । वैसे ही कोथरुड, बिबवेवाडी, धुलियाँ, औरंगाबाद, नासिक आदि अनेक स्थानोंपर धर्मस्थानक का निर्माण आप ही की प्रेरणा से संभव हुआ है ।

ऐसी धर्मानुरागिनी साधिका का अभिनंदन !

शिक्षण फंडों के क्षेत्र में भी आपका प्रेरक उद्‌बोधन अनेक जरुरतमंद विद्यार्थियों के लिए दीपस्तंभ बना हुआ है । नासिक में प्रीतिसुधाजी शिक्षण फंड, राहता में साध्वी प्रीतिसुधाजी इंग्लिश मिडियम स्कूल, मांची हिल्स – संगमनेर में प्रीतिसुधाजी नगर में भव्य स्कूल एवं आयुर्वेदिक कॉलेज आदि शिक्षण क्षेत्रों में भक्तोंने आपका नाम देकर भक्ति का अनूठा आदर्श स्थापित किया है ।

ऐसी सरस्वती पूजक माँ भगवती का हार्दिक अभिनंदन !

आपका कार्यक्षेत्र इतना विशाल है जिसे इतने छोटे पत्र में अंकित कर पाना असंभव है । आकाश के आलोक में किस द्वार से प्रेवश कर सकते हैं ? अमृत को कौनसी मिठाई की उपमा दे सकते है ? ऐसा आपका व्यक्तित्व है किन शब्दों में बयान कर सकते है ? क्योंकी आपका ध्येय है – आँखें खोलूँ तो जीवदाया और धर्म प्रभावना का कार्य करना और आँखें बंद करुँ तो आत्मानंद का आस्वाद लेना ।

ऐसी शब्दातीत – कल्पनातीत – महाशक्ति का समस्त भक्तगणों की ओर से हार्दिक हार्दिक हार्दिक अभिनंदन !

अपने नाम के अनुरुप व्यक्तिमत्त्व जिन्हें प्राप्त हुआ है, लाखों श्रद्धालुओं के हृदयवीणा को झंकृत करनेवाले, हजारों दिग्भ्रमितों को योग्य दिशानिर्देश करके जीवन के सच्चे आनंद का आस्वाद देनेवाले, हृदयस्पर्शी वक्तव्य के कारण जनमानस के आस्था केन्द्र ऐसे सद्‌गुरुवर्या के –

ऊर्जामय अस्तित्त्व को नमन !
तेजस्वी पुरुषार्थ को नमन !
ओजस्वी वक्तृत्त्व को नमन !
यशस्वी कर्त्तृत्त्व को नमन !
मनस्वी व्यक्तित्त्व को नमन !
करती है फरियाद हजारों साल यह धरती !
तब कहीं जाकर पैदा होती है एक सुधामय प्रीति ।। ●

श्री गौतम लब्धि (निधि) कलश

प्रेरणा : उपाध्याय **प. पू. श्री. प्रवीणऋषिजी म.सा.**

गौतम निधि मार्फत गरजू साधार्मिक बांधवाना शैक्षणिक, वैद्यकीय सेवा व विकास कार्यासाठी मदत केली जाते.

संपर्क : गौतम लब्धि फाऊंडेशन

महावीर प्रतिष्ठान, पुणे

मोबा. : ९३२५३२१२६७, ९८२२६५४७४३

छोटी सी बातें

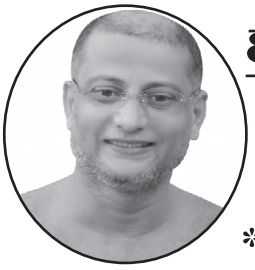

भारत गौरव
आचार्य पुलक सागर

❊ **जिंदगी में सब कुछ अपनी शर्तों पर नहीं होता, सब कुछ जीतने के लिए कभी कभी बहुत कुछ हारना पड़ता है ।**

❊ **जब हमें सफलता मिलती है तो दुनिया में हमारी पहचान बनती हैं और जब हमें असफलता मिलती है तो हमें दुनिया की पहचान होती है ।**

❊ **जिंदगी भी कितनी बेवफा है कि हम उसे रोज संभालते हैं और वह हर सुबह हमारी उम्र कम करते जाती हैं ।** ●